

खजूर में लगने वाले मुख्य कीट एवं समेकित प्रबंधन

खजूर की खेती शुष्क क्षेत्रों में पारंपरिक व्यवसाय है। भारत में गुजरात, राजस्थान और पंजाब में खजूर की खेती पिछले 20 सालों में शुरुआत हुई है। दुनिया भर में खजूर में लगने वाले 50 से अधिक कीट पाये जाते हैं। इनमें से 25 प्रतिशत से अधिक कीट प्रजातियां गंभीर रूप में मानी गई हैं। भारत में इसके मुख्य कीटों के रूप में खजूर का स्केल (पर्लटोरिया ब्लंकार्डी), खजूर का मोथ (बैट्राचेद्रा अमाइड्रैला), रेड पाम ईल्ली (रिंकोफोरस फेरुजिनस) एवं राइनोसेरस बीटल (ओरिक्ट्स राइनोसेरस) आदि को माना गया है। समेकित कीट प्रबंधन (आई पी एम) का उपयोग फलों में 1940 के बाद किया गया। इससे पहले 1800 से 1940 तक कीट प्रबंधन के लिए तैल, साबुन, रेजिंस, पौधों से प्राप्त जहरीले पदार्थ एवं अकार्बनिक योगिक का उपयोग होता था। 1940 के बाद सिंथेटिक कीटनाशकों का व्यापक प्रयोग होने लगा।

कीटनाशकों के बार-बार प्रयोग से कीटों में इनके विरुद्ध प्रतिरोधकता विकसित होने लगती है। इस प्रकार कीटों में प्रतिरोधकता होने से कीटनाशकों का प्रयोग अधिक किये जाने लगा। इससे वातावरण खराब होने के साथ ही, कीटों के प्राकृतिक शत्रु भी नष्ट होने लगे। इन सभी कारणों से समेकित कीट प्रबंधन (आई पी एम) की आवश्यकता पड़ने लगी।

खजूर में लगने वाले मुख्य कीट

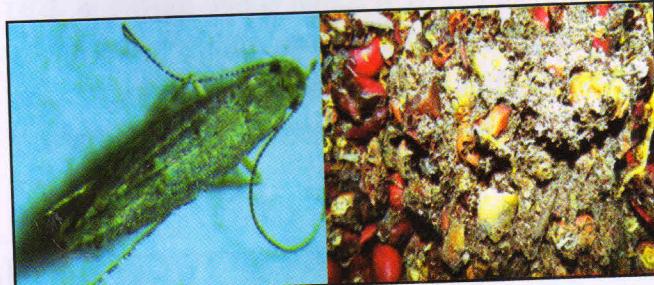
1. खजूर का स्केल (पर्लटोरिया ब्लंकार्डी)

स्केल कीट खजूर उत्पादक क्षेत्रों में व्यापक रूप से मौजूद होता है। यह अल्जीरिया, कुवैत, लीबिया, मॉरिसिनिया, मोरक्को और ट्यूनीशिया में एक गंभीर कीट माना जाता है। खजूर स्केल का प्रकोप दो से आठ साल तक के पौधों में बहुत अधिक पाया जाता है, लेकिन इसके प्रकोप से पौधा मरता नहीं है। इस कीट के व्यस्क एवं निंफ पौधे की पतियों का रस चूसते हैं। इसके प्रकोप से पौधे की पतियाँ पीली पड़ जाती हैं। इस कीट का प्रकोप मानसून के

आगमन (मई और जून) के दौरान शुरू हो जाता है और नवम्बर व दिसंबर महीनों में विकराल रूप ले लेता है। बीकानेर क्षेत्र में इस कीट की मात्रा 1.10 से 18.77 प्रति सेमी आकी गई है और इसको एक प्रमुख कीट के रूप में माना गया है।

2. खजूर का मोथ (बैट्राचेद्रा अमाइड्रैला)

लेसर मोथ खजूर फलों में लगने वाला एक महत्वपूर्ण कीट है। इसका ठीक से प्रबंधन नहीं करें तो, फलों को 50 प्रतिशत से अधिक हानि हो सकती है। यह संयुक्त अरब अमीरात में खजूर के प्रमुख कीटों में से एक है। राजस्थान में इस कीट से लगभग 16 से 20 प्रतिशत तक नुकसान होता है। इसका प्रकोप खजूर के खेत से शुरू होकर इसके



बाद भंडारण तक फैल जाता है और संग्रहीत/भण्डारित फलों में कई पीढ़ियाँ पूरी करता है। पके हुये फलों में इस कीट का प्रकोप ज्यादा होता है। इसकी सूँडी फलों के गूदे को खाती है। व्यस्क पौधों को नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। प्रभावित फल खाने योग्य नहीं रहते हैं।

। ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତ୍ ମହାକବୀ

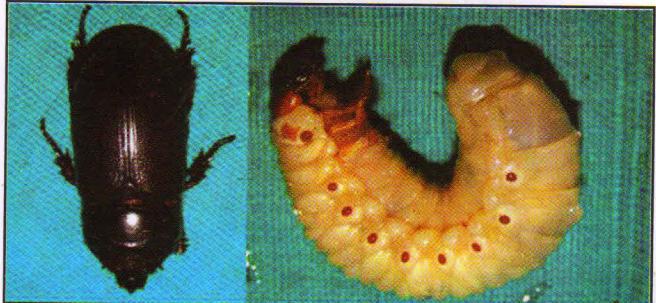
— ተቋር ምዕራዊ ቢሮቅ በዚከናን ፖስ ተዋዋቁ ማጻዣያን ገዢ
ማጻዣያን ፖስ ከዚከናን ገዢ እና ስምን ይህ ማጻዣ ተወካይ
በኩል ተዋዋቅ ተዋዋቅ መረጃዎች መደመድ ቅዱሳን ይህ ተዋዋቅ
ይኖሩት ዘዴ ፖስ ከዚከናን ገዢ ተዋዋቅ ገዢ መቀባቀስ

(ՀԱՅԻ ՏԱՐ) ԵՅՅԻԿ ՉՈՎ ԾՔՆԻԳՆ

မြန်မာစာတွင် အမျိုးမျိုး ရှိခဲ့သော ပုဂ္ဂန်များ ဖြစ်ပါသည်။ မြန်မာဘာသာ ပုဂ္ဂန်များ မြန်မာ လူများ ပုဂ္ဂန်များ ဖြစ်ပါသည်။ မြန်မာဘာသာ ပုဂ္ဂန်များ မြန်မာ လူများ ပုဂ္ဂန်များ ဖြစ်ပါသည်။



ԵՐԵՎԱՆ ՄԻԼԻՏԱՐԵ ՓՈԲԻ ՀԱՅ-ՓԻԼԻՔՎԻԴԻ

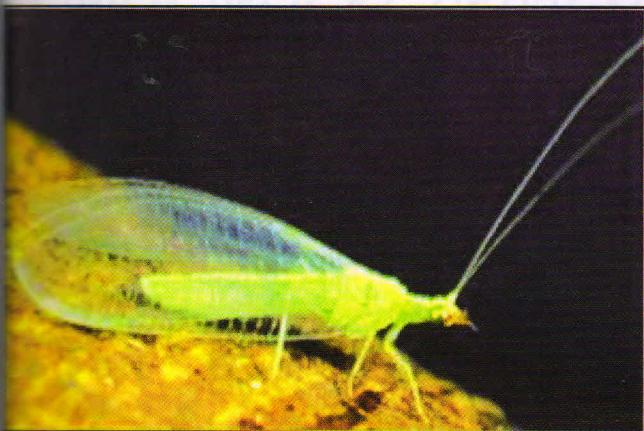


ପ୍ରକାଶକ

4. ასეთითავათ ქცა (ასეთითავათ გრაფიკი)



(**ԱԼԵԽԱՆԴՐԻ** ԱՀԱԳԻՒՓՏԻ) ԱՅՀԱ ԿԱՀ ԱԼԻ ՋԵ. Է.



वयस्क क्रायोसोपा



मकड़ी



प्रेर्झेंग मैंडीड



कोक्सीनेला सेप्टेमपंकटाटा

खजूर के लेसर मोथ के नियंत्रण के लिए पारासाइरोला स्वीर्सकीयाना, ब्रेकोन आदि परजीवी का प्रयोग करना चाहिए। राइनोसेरस बीटल, रेड पाम ईल्ली व लेसर मोथ के लिए फेरोमोन का उपयोग एक सबसे अच्छा तरीका है। रेड पाम ईल्ली के लिए घरेलू और अंतरराष्ट्रीय संग्रहों निषिद्ध अपनाना चाहिए जिससे कि एक जगह से दूसरी तरफ इस कीट का प्रकोप नहीं फैल सके। रेड पाम ईल्ली के नियंत्रण के लिए खजूर के ऑफ—शूट्स निकाल देने चाहिए साथ ही प्रिडेटर, पलेटीमेरिस ओर्थक्ट्स का उपयोग भी करना चाहिए। राइनोसेरस बीटल के व्यस्क को लाइट ड्रून से भी नियंत्रित कर सकते हैं। पौधों के पास में नेटवेलीन बोल्स रख देने से भी बीटल नहीं आते हैं। स्केल

कीट के लिए अगस्त माह में ईमीडाक्लोपरीड 17 एस एल का 0.5 से 0.7 मिली./ लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए। रेड पाम ईल्ली व लेसर मोथ के लिए डाइमीथोएट 30 ई सी व मैलाथियोन 50 ई सी का 1.2 से 1.5 मिली./लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करना चाहिए। राइनोसेरस बीटल के नियंत्रण हेतु पौधों के तने के आसपास और छिद्र में डाइजीनोन, मोनोक्रोटोफोस आदि रसायनों का प्रयोग करना चाहिए।

श्रवण एम हलधर¹, सी.एम. मुरलीधारन², शिवराम मीना³ एवं हेमलता सहल⁴

¹वैज्ञानिक (कीट विज्ञान), ²कीट विज्ञान विशेषज्ञ, खजूर अनुसंधान केन्द्र, भुज (गुजरात), ³वरिष्ठ वैज्ञानिक (कृषि प्रसार), ⁴एस आर एफ भाकृअनुप—केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर